REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 7 | APRIL - 2018

# ''व्यापारिक फसलों का कृषकों के जीवन स्तर पर प्रभाव'' (पाली एवं जालोर जिलो के सन्दर्भ में)

डॉ. देवेन्द्र मुझाल्दा[1] , गोरधनसिंह [2]
[1]निर्देशक सहायक आचार्य एवं विभागाध्यक्ष , भूगोल विभाग ,
माधव विश्वविद्यालय, पिण्डवाड़ा (सिरोही).
[2]शोधार्थी , पी.एच.डी. (भूगोल)

## 1. परिचय :–

वर्तमान समय में व्यापारिक फसलों का उत्पादन तेजी से बढ़ रहा हैं। अध्ययन क्षेत्र पाली एवं जालोर जिलों में वर्तमान समय में व्यापारिक कृषि के महत्व को कृषक तेजी से बढ़ावा दे रहे हैं, क्षेत्र में व्यापारिक फसलों का कृषकों के जीवन स्तर पर तेजी से प्रभाव देखा जा रहा है। इन फसलों के उत्पादन से कृषको के जीवन स्तर एवं आर्थिक जीवन पर तेजी से प्रभाव आया है, साथ ही इन फसलों के उत्पादन से उन्हें आर्थिक लाभ भी प्राप्त हो रहा है। क्षेत्र में व्यापारिक फसलों के उत्पादन में प्रमुख रूप से मूँगफली, सूरजमूखी, जीरा, इसबगोल (घोड़ा जीरा), गन्ना, खार, खजूर, तांबखू, तिलहन, सोयाबीन, अरण्डी, होहोबा–जोजोबा, जैतून आदि व्यापारिक फसलों का उत्पादन किया जा रहा है। क्षेत्र में कृषको द्वारा व्यापारिक फसलों के उत्पादन का प्रमुख उद्देश्य सीमित कृषि भूमि तथा सिंचाई के अल्प साधनों की वजह से इन फसलों को आधुनिक कृषि पद्धति तथा कम सिंचाई वाली व्यापारिक फसलों का उत्पादन यहाँ के कृषकों के द्वारा किया जा रहा है।

व्यापारिक फसलों के अधिक उत्पादन हेतु कृषक उत्तम किस्म के बीजों का उपयोग करते है, तथा वैज्ञानिक कृषि पद्धति से बीजों को रोपत है, साथ ही जैविक तकनीकों एवं खाद, कीटनाशकों की आधुनिक किस्मों को प्रयोग में लाते है। ये बीजों को जननीक विज्ञान के माध्यम से इनकी गुणवत्ता में विकास अब एक आम बात हो गई है। आज जैविक खाद के माध्यम से कृषि भूमि को बिना नुकसान किये फसलों को अधिक पोषक तत्व प्रदान किये जाते है। क्षेत्र में व्यापारिक फसल या वाणिज्यिक फसल (Case Crop) उन फसलों को कहा जाता है। जो कमाई के लिये उगाई जाती है। किसान इन फसलों को बेचकर धन कमाता है। पाली एवं जालोर जिलों में पिछले कुछ वर्षो से कृषक व्यापारिक फसलों का उत्पादन अधिक कर रहे है। जिसका उनके जीवन स्तर पर प्रभाव तेजी से हो रहा है।

## 2. अध्ययन का उद्देश्य :–

शोध कार्य में संमको को पूर्ण योजना के एकत्रित करना प्रतिपूर्ण हो सकता है। उन्हें उद्देश्य साध्य होना चाहिए। इस दृष्टि से एक विधिवत् शोध प्रक्रिया का अनुसरण किया गया है। अतः प्रस्तुत शोध पत्र को पूर्ण करने के लिये निम्नांकित उद्देश्यों पर ध्यान दिया गया है–

1) व्यापारिक फसलों का कृषको के जीवन स्तर पर प्रभावों का आंकलन करना।
2) व्यापारिक फसलों से कृषकों को होने वाले आर्थिक लाभ की समीक्षा करना।
3) कृषकों द्वारा क्षेत्र में कौन–कौन–सी व्यापारिक फसलों का उत्पादन किया जा रहा है, इसका आंकलन करना।
4) कृषकों की प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि का आंकलन करना।

### 3. क्षेत्र का चयन :–

क्षेत्र चयन में प्रस्तुत शोध–पत्र में शोधार्थी द्वारा शोध शीर्षक **''व्यापारिक फसलों का कृषको के जीवन स्तर पर प्रभाव''** (पाली एवं जालोर जिलो के सन्दर्भ में) विषय पर शोध–पत्र तैयार किया गया है, क्षेत्र के चयन में शोधार्थी उसी क्षेत्र का मूल निवासी है, तथा स्वयं कृषि कार्य में संलग्न है, व्यापारिक फसलों का कृषकों के जीवन स्तर पर किस प्रकार प्रभाव पड़ रहा है आदि का आंकलन करने के लिये, इस क्षेत्र का चयन किया गया है। तथा देखा गया है, कि इस प्रकार कृषको के जीवन स्तर पर व्यापारिक फसलों का प्रभाव पड़ा है, आदि का आंकलन करने के इस क्षेत्र का चयन शोधार्थी द्वारा किया गया है।

### 4. शोध प्रविधि :–

प्रस्तुत शोध–पत्र में शोध प्रविधि के माध्यम से दोनों ही प्रकार के आँकड़ो का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक एंव द्वितीयक। प्राथमिक आँकड़ो के लिये शोधार्थी द्वारा कृषि विभाग, किसान कल्याण विभाग, कृषि सेवा केन्द्र, कृषि अनुसंधान कार्यालय तथा कृषको से अनुसूची के माध्यम से साक्षात्कार किया गया तथा वांछित जानकारियाँ प्राप्त की है। तथा द्वितीयक आँकड़ो के लिये विभिन्न प्रकार के अप्रकाशित अभिलेख, जिला सांख्यिकीय पुस्तिका समाचार–पत्र, मासिक पत्रिकाएँ आदि के माध्यम से आँकड़े प्राप्त कर उनका सारणीयन कर तथ्यों का विश्लेषण कर यर्थात जानकारियाँ प्राप्त की गई है।

### 5. अध्ययन का महत्व :–

प्रस्तुत अध्ययन का महत्व यह है, कि क्षेत्र में व्यापारिक फसलों के उत्पादन में तेजी से वृद्धि हो रही है, अधिकांश कृषक व्यापारिक फसलों की ऊपज ले रहे है, तथा इन फसलों का महत्व विदेशी व्यापार में तेजी से बढ़ रहा है, जीरा जैसी व्यापारिक फसल को अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में बहुत ही महत्व स्थान है, ये फसल ऊपज के बाद सीधे विदेशों को निर्यात की जाती है, साथ ही दूसरी भी अनेक व्यापारिक फसले है, जो अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में अपनी पहचान बनाये हुए है, तथा एकमात्र उपज पाली एवं जालोर जिलों में ही होती है।

### 6. व्यापारिक फसलों का कृषकों के जीवन स्तर पर प्रभाव :–

अध्ययन क्षेत्र पाली एवं जालोर जिलो में व्यापारिक फसलों के उत्पादन से क्षेत्र के कृषकों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है, तथा वार्षिक आय भी तेजी से बढ़ी है। व्यापारिक फसलों में अनेक फसलें है जिनका उत्पादन कृषक कर रहे है, इन फसलों की मांग अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में तेजी से बढ़ रही है।

**तालिका क्रमांक–01**

**व्यापारिक फसलों का कृषकों के जीवन स्तर पर प्रभाव**

| क्रमांक | प्रमुख व्यापारिक फसले | कृषकों के जीवन स्तर पर प्रभाव | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | जीरा | 2,56,534 | 06.86 |
| 2. | सूरजमूखी | 3,24,426 | 08.68 |
| 3. | इसबगोल (घोड़ा जीरा) | 84,523 | 02.26 |
| 4. | अरण्डी | 5,24,316 | 14.03 |
| 5. | होहोबा–जोजोबा | 64,530 | 01.72 |
| 6. | तिलहन | 6,64,932 | 17.80 |
| 7. | मूँगफली | 4,24,628 | 11.36 |
| 8. | खजूर | 2,29,499 | 06.14 |
| 9. | खार | 3,61,598 | 09.68 |
| 10. | सोयाबीन | 2,64,226 | 07.07 |
| 11. | गन्ना | 1,71,364 | 04.58 |
| 12. | सरसो | 3,64,724 | 09.76 |
| | **कुल योग** | **37,35,300** | **100.00** |

**स्त्रोत** : शोधाथी द्वारा सर्वेक्षण के आधार पर संकलित आँकड़े।

उपरोक्त तालिका क्रमांक–01 से स्पष्ट है, कि अध्ययन क्षेत्र पाली एवं जालोर जिलो में व्यापारिक फसलों का कृषको के जीवन स्तर पर किस प्रकार प्रभाव पड़ी है। जीरा की फसल का 06.86 प्रतिशत किसानों के जीवन स्तर पर प्रभाव पड़ा इस फसल को अधिक उगाया जाता हैं। इसी प्रकार सूरजमूखी की फसल का प्रभाव 8.68 प्रतिशत किसानों के जीवन स्तर पर पड़ा है, क्षेत्र में इस फसल का उत्पादन भी अधिक होता है। इसबगोल (घोड़ा जीरा) की फसल का प्रभाव 2.26 प्रतिशत किसानों पर पड़ा हैं। इसी प्रकार अरण्डी की फसल का प्रभाव 14.03 प्रतिशत कृषको पर पड़ा है। होहोबा–जोजोबा की फसल का उत्पादन क्षेत्र के 01.72 प्रतिशत किसानों के जीवन स्तर पर पड़ा है। इसी प्रकार तिलहन की फसल का उत्पादन 17.80 प्रतिशत कृषको के जीवन स्तर पर पड़ा है।

अतः उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है, कि इन व्यापारिक फसलों के उत्पादन से क्षेत्र के कृषको के जीवन स्तर पर प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है, तथा इन फसलों की मांग अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में भी अधिक है तथा इससे कृषकों की आय में भी तेजी से वृद्धि हुई है, उनके जीवन स्तर में सुधार हुआ है।

## 7. निष्कर्ष :–

**''व्यापारिक फसलों का कृषको के जीवन स्तर पर प्रभाव।''** शीर्षक पर किये गये शोध–पत्र में व्यापारिक फसलों के उत्पादन का कृषको के जीवन स्तर पर किस प्रकार प्रभाव पड़ा है, जिसको निम्नांकित निष्कर्षो के माध्यम से स्पष्ट किया गया है–

1) व्यापारिक फसलों के उत्पादन का अध्ययन क्षेत्र पाली एवं जालोर जिलों में 64 प्रतिशत कृषको पर प्रभाव पड़ा है।
2) कृषको के जीवन स्तर के साथ–साथ उनकी प्रतिव्यक्ति आय में भी वृद्धि हुई है।
3) अध्ययन क्षेत्र में पिछले दो सालों में व्यापारिक फसलों का 46 प्रतिशत क्षेत्रफल बढ़ा है। पहले इन फसलों को कृषक कम लेते थे, लेंकिन वर्तमान में तेजी से ले रहे है।
4) इन व्यापारिक फसलों के लिये कृषक आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतियों का सहारा ले रहे है, जिससे इनका उत्पादन तेजी से बढ़ रहा हैं।

## 8. सुझाव :–

1) व्यापारिक फसलों के उत्पादन में आधुनिक कृषि का और वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग किया जा रहा है, लेंकिन कृषक अधिकांश निरक्षर, उन्हें साक्षर करने की आवश्यकता है।
2) क्षेत्र में व्यापारिक फसलों का उत्पादन बढ़ाने के लिये अधिक से अधिक कृषकों को इन फसलों के लाभों के बारे में प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है।
3) इन फसलों के निर्यात के लिये क्षेत्र में बाजार उपलब्ध कराने की आवश्यकता है, ताकि कृषक अपनी उपज क्षेत्र में ही विक्रय कर सकें।
4) अधिक उपज देने वाली फसलों को बोया जाने ताकि अधिक से अधिक उत्पादन एवं लाभ प्राप्त हो सके।
5) उच्च गुणवत्ता वाले बीजों का उपयोग किया जाये ताकि कम श्रम में अधिक उपज हो सके।

## 9. सन्दर्भ सूची (Reference) :–

1) **डॉ. जाट द्विरधीचन्द्र** : जल ग्रहण प्रबंधन 2000 प्वाइंटर फसली सर्च, जयपुर (राजस्थान)
2) **Bhatia S.S. (1967) :** A new measure of agriculture efficiency in U.P. Indian Economic Geography, p.p. 43
3) **मूखर्जी आर.एस. (1962)** : अनुसंधान विधियाँ, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, पेज 09–12
4) **बंसल पी.सी. (1974)** : Agriculture problem of India 29 Fp New Delhi A mold Heinemann, p.p. 3-90
5) **Chouhan (1996) :** Study of Agriculture land, Shivlal Agrawal Company Agra P.p.-18